CBSE Class 12 हिंदी कोर

Sample Paper 04 (2019-20)

Maximum Marks:
Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

- इस प्रश्न पत्र में तीन खंड हैं - क, ख, ग।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
- एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
- दो अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।
- तीन अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।
- चार अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 80-100 शब्दों में लिखिए।
- पाँच अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 120-150 शब्दों में लिखिए।

Section A

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (12)**
   मानव समाज के विकास तथा सभ्यताओं के उत्थान में शिक्षा के योगदान के बारे में पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध है, लेकिन ये विश्वास जिन परिकल्पनाओ पर आधारित हैं, वे सब-की-सब एक समान स्वीकार्य हैं। इस तथ्य से कि शिक्षा दोधारी तलवार की तरह कार्य करती है और करती रही है, उस सामाजिक उद्देश्य की कारगुजारी सही सिद्ध होती है, जो इसे विशिष्ट ढंग में घुमाता और मोड़ता है।
   सामाजिक संगठन के स्वरूप और शासक अभिजात वर्ग के रुझाने के अनुसार, समुचिन तकनीको के रूप में शिक्षा का उपयोग युद्ध के लिए और शांति के लिए, हत्या के लिए और आत्मरक्षा के लिए, जनगण को दास बनाने के लिए और उन्हें दासता में मुक्त कराने के लिए किया जाता रहा है।
   शिक्षा विद्यमान ज्ञान का वाहक होती है और इस कारण वह जिस प्रणाली का अंश है, उसे स्थायित्व देने में योगदान करती है, लेकिन जब पुराना समाज शिक्षा के द्वारा अपना पुनरुत्पादन कर रहा होता है, उस समय भी असहमति की चेतना को यह बढ़ाती रहती है, जो खुद समाज मे विद्यमान असहमतिमूलक वास्तविकता का प्रतिबिंब होती है। यह चेतना ही प्रगतिशील परिवर्तन का स्रोत बनती है।
   शिक्षा और सामाजिक-आर्थिक विकास आपस में अभिन्न रूप से जुड़े है। वे एक-दूसरे को सहारा देते है। आगे बढ़ाते हैं। और मजबूत व स्थायी बनाते है। इस स्वतः स्पष्ट संबंध को। बार-बार खासकर विकासशील देशों में दोहराना पड़ता है,

इसका कारण या तो दिग्भ्रमित लोगो की चली आ रही मूढ़ता है या इस असमान विश्व मे उन लोगों का निरंतर प्रयास है, जिनका निर्धन समाजो को निर्धन बनाए रखने मे स्वार्थ निहित है।

i. उपरोक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (1)
ii. किसके बारे में पर्याप्त साक्ष्य प्राप्त होते है? (1)
iii. शिक्षा को 'दोधारी तलवार' क्यो कहा है? (2)
iv. 'सामाजिक उद्देश्य' की कारगुज़ारी क्या है? (2)
v. अभिजात वर्ग की इच्छानुसार शिक्षा का किन रूपों में उपयोग होता है? (2)
vi. प्रगतिशील परिवर्तन का स्रोत किस चेतना को कहा है? (2)
vii. ज्ञान का वाहक होने के नाते शिक्षा क्या करती है? (2)

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (1$\times$4)**

जाग रहे हम वीर जवान,
जियो, जियो ऐ हिंदुस्तान।
हम प्रभात की नई किरण हैं, हम दिन के आलोक नवल,
हम नवीन भारत के सैनिक, धीर, वीर, गंभीर, अचल।
हम प्रहरी ऊँचे हिमाद्रि के, सुरभि स्वर्ग की लेते हैं,
हम हैं शांति-दूत धरणी के, छाँह सभी को देते हैं।
वीरप्रसू माँ की आँखों के, हम नवीन उजियाले हैं,
गंगा, यमुना, हिंद महासागर के हम ही रखवाले हैं।
तन, मन, धन, तुम पर कुरबान
जियो, जियो ऐ हिंदुस्तान।
हम सपूत उनके, जो नर थे, अनल और मधु के मिश्रण,
जिनमें नर का तेज प्रखर था, भीतर था नारी का मन।
एक नयन संजीवन जिनका, एक नयन था हलाहल
जितना कठिन खड्ग था कर में उतना ही अंतर कोमल।
थर-थर तीनों लोक काँपते थे जिनकी ललकारों पर,
स्वर्ग नाचता था रण में जिनकी पवित्र तलवारों पर।
हम उन वीरों की संतान, जियो, जियो ऐ हिंदुस्तान।

i. 'नवीन भारत' से क्या तात्पर्य है?
ii. उस पंक्ति को उद्धृत कीजिए, जिसका आशय है कि भारतीय बाहर से चाहे कठोर दिखाई पड़े, उनका हृदय कोमल होता है?
iii. "हम उन वीरों की संतान"-उन वीर पूर्वजों की कुछ विशेषताएँ लिखिए।
iv. 'वीरप्रसू माँ' किसे कहा गया है? क्यों?

Section B

3. **प्राकृतिक आपदाएँ** विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

OR

परहित सरिस धर्म नहिं भाई विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

OR

आज की बचत कल का सुख विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

4. भाँति-भाँति के अंधविश्वास और भ्रांतियाँ फैलाने में टी.वी. माध्यमों के इस्तेमाल पर हस्तक्षेप कर उन्हें रुकवाने के दिशा-निर्देश जारी करने के लिए भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्री को पत्र लिखिए।

OR

किसी पर्यटन स्थल के होटल के प्रबंधक को निर्धारित तिथियों पर होटल के दो कमरे आरक्षित करने का अनुरोध करते हुए पत्र लिखिए। पत्र में उन्हें कारण भी बताइए कि आपने वही होटल क्यों चुना।

5. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिये:
   a. पेज थ्री पत्रकारिता क्या है?
   b. पत्रकारिता में बीट किसे कहते हैं?
   c. डेड लाइन का क्या आशय है?
   d. पत्रकारिता की भाषा में मुखड़ा किसे कहते हैं?
   e. पत्रकारीय लेखन किसे कहते हैं?

6. **बढ़ते अपराध** विषय पर एक आलेख लिखिए।

OR

सांप्रदायिकता का ज़हर पर एक फीचर लिखिए।

OR

समाचार-पत्रों में हार्ड न्यूज व सॉफ्ट न्यूज से क्या तात्पर्य है?

Section C

7. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×3=6)**

मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता हूँ,
मै निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ,
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता,
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ!
मै जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दुःख दोनो में मग्न रहा करता हूँ;
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए,
मैं भव मौजों पर मुस्त बहा करता हूँ!

i. 'निज उर के उद्गार' से कवि का क्या तात्पर्य है?
ii. कवि को संसार क्यों प्रिय नहीं है?
iii. संसार की विषमताओं के बीच भी कवि कैसे जी रहा है?

OR

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×3=6)

सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।।
अस बिचारि जियँ जागहु ताता। मिलइ न जुगत सहोदर भ्राता।।
जथा पंख बिनु खग अति दीना। मुनि बिनु फनि करिबर कर हीना।।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौ जड़ दैव जिआवै मोही।।
जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाई गँवाई।।
बरु अपजस सहतेउँ जग माही। नारि हानि बिसेष छति नाही।।

i. काव्यांश के आधार पर राम के व्यक्तित्व पर टिप्पणी कीजिए।
ii. राम ने भ्रातृ-प्रेम की तुलना में किनकी हीन माना है?
iii. 'जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई' -कथन के पीछे निहित भावना पर टिप्पणी कीजिए।

8. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×2=4)**

अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खरतनाक किनारों से
और बाख जाते हैं तब तो
और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं
पृथ्वी और भी तेज घूमती हुई आती है

i. प्रस्तुत काव्यांश का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
ii. काव्यांश की भाषा-शैली पर टिप्पणी लिखिए।

OR

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×2=4)

छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।

i. काव्यांश के भाव-सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।
ii. मनोभावों की तुलना किससे की गई है?

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 60-70 शब्दों में दीजिये:

a. कवि कुंवर नारायण के अनुसार कोई बात पेचीदा कैसे हो जाती है?

b. अपने परिवेश के उपमानों का प्रयोग करते हुए सूर्योदय और सूर्यास्त का शब्दचित्र खींचिए।

c. गोरखपुरी की रुबाइयों के कला पक्ष के बारे में बताएँ।

10. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (2×3=6)**

हम आज देश के लिए करते क्या है? माँगे हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी है पर त्याग का कही नामों-निशान नही है। अपना स्वार्थ आज एकमात्र लक्ष्य रह गया है। हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते है पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं? काले मेघा दल-के-दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी-की-फूटी रह जाती है, बैल पियासे-के-पियासे रह जाते हैं? आखिर कब बदलेगी यह स्थिति?

i. लेखक को क्यों लगता है कि आज हम देश के लिए कुछ नहीं करते?
ii. भ्रष्टाचार को लेकर व्यवहार में क्या विसंगति है?
iii. "सुविधाओं की बरसात से भी गरीब को कोई लाभ नहीं मिलता।" इस बात को लेखक ने कैसे कहा है? स्पष्ट कीजिए।

OR

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (2×3=6)

एक-एक बार मुझे मालूम होता है कि यह शिरीष एक अद्भुत अवधूत है। दुःख हो या सुख, वह हार नहीं मानता। न ऊधो का लेना, न माधो का देना। जब धरती और आसमान जलते रहते हैं, तब भी यह हज़रत न जाने कहाँ से अपना रस खींचते रहते हैं। मौज़ में आठों याम मस्त रहते हैं। एक वनस्पतिशास्त्री ने मुझे बताया है कि यह उस श्रेणी का पेड़ है जो वायुमंडल

से अपना रस खींचता है। ज़रूर खींचता होगा। नहीं तो भयंकर लू के समय इतने कोमल तंतुजाल और ऐसे सुकुमार केसर को कैसे उगा सकता था? अवधूतों के मुँह से ही संसार की सबसे सरस रचनाएँ निकली हैं। कबीर बहुत कुछ इस शिरीष के समान ही थे, मस्त और बेपरवा, पर सरस और मादक।

i. अवधूत किसे कहते हैं? लेखक शिरीष को अवधूत क्यों मानता है?
ii. 'यह हज़रत' कौन हैं? उनकी किस विशेषता का उल्लेख किया गया है?
iii. शिरीष की किस विशेषता के कारण लेखक वनस्पतिशास्त्री के कथन को सच मानता है?

11. निम्नलिखित A, B, C प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिये, प्रश्न D अनिवार्य है : (4+4+2)

a. **बाज़ारूपन** से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं अथवा बाज़ार की सार्थकता किसमें है?

b. भारत-पाकिस्तान के आपसी संबंधों को सुधारने के लिए दोनों सरकारें प्रयासरत हैं। व्यक्तिगत तौर पर आप इसमें क्या योगदान दे सकते/सकती हैं?

c. दो कन्या-रत्न पैदा करने पर भक्तिन पुत्र-महिमा में अंधी अपनी जिठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी। ऐसी घटनाओं से ही अकसर यह धारणा चलती है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है। क्या इससे आप सहमत हैं?

d. चार्ली चैप्लिन की फ़िल्म **मेकिंग ए लिविंग** की विशेषता बताइए।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 80-100 शब्दों में दीजिये:

a. पार्टी में यशोधर बाबू का व्यवहार आपको कैसा लगा? **सिल्वर वैडिंग** कहानी के आधार पर बताइए।

b. **सिल्वर वैडिंग** वर्तमान युग में बदलते जीवन-मूल्यों की कहानी है। सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

c. **जूझ** के कथानायक का मन पाठशाला जाने के लिए क्यों तड़पता था? उसे खेती का काम अच्छा क्यों नहीं लगता था? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

d. सिंधु-सभ्यता साधन-संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था। कैसे?

e. सिंधु घाटी सभ्यता में किन-किन कृषि उपजों के उत्पादन के प्रमाण प्राप्त होते हैं? **अतीत के दबे पाँव** के आधार पर लिखिए।

CBSE Class 12 हिंदी कोर
Sample Paper 04 (2019-20)

Solution

Section A

1. i. प्रस्तुत गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है-'शिक्षा और समाज'
   ii. मानव समाज के विकास तथा सभ्यता के उत्थान में शिक्षा के योगदान के बारे में पर्याप्त साक्ष्य प्राप्त होते है।
   iii. शिक्षा को 'दोधारी तलवार' इसलिए कहा गया है क्योंकि एक ओर तो शिक्षा से समाज की उन्नति होती है, दूसरी ओर इसका उपयोग युद्ध के लिए तथा जनता को गुलाम बनाए रखने के लिए भी होता है। भलाई और बुराई दोनों के काम शिक्षा के मदद से ही होते हैं।
   iv. 'सामाजिक उद्देश्य' की कारगुज़ारी का अर्थ यह है कि शासक लोग शिक्षा का उपयोग अपनी इच्छा के अनुसार करते हैं तथा उससे अपने सामाजिक उद्देश्य को पूरा करते है। उनको समाज की शिक्षा के प्रति कोई चिंता नहीं होती।
   v. अभिजात वर्ग की इच्छानुसार शिक्षा का प्रयोग युद्ध, हत्या, अधिकाधिक लोगों को गुलाम बनाने तथा निर्धन समाज को निर्धन बनाए रखने के लिए होता है।
   vi. प्रगतिशील परिवर्तन का स्रोत असहमति या विरोध की चेतना को कहा गया है क्योंकि बिना विरोध के प्रगति की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।
   vii. ज्ञान का वाहक होने के नाते शिक्षा जिस प्रणाली का अंग होती है, उसे स्थायित्व देने का प्रयास करती है।
2. i. नवीन भारत से कवि का तात्पर्य प्रगतिशील भारत से है।
   ii. 'जिनमें नर का तेज प्रखर था, भीतर था नारी का मन' अथवा 'जितना कठिन खड्ग था कर मे उतना ही अंतर कोमल' प्रस्तुत पंक्तियों का आशय है कि भारतीय भले ही ऊपर से कितने भी कठोर हो, पर उनका हृदय कोमल होता है ।
   iii. हमारे भारतीय पूर्वज अत्यंत वीर थे। वे अपने तथा अपने देश के सम्मान की रक्षा हेतु सर्वस्व न्योछावर कर सकते थे।
   iv. कवि ने भारत भूमि को 'वीरप्रसू माँ' की संज्ञा दी है क्योंकि भारत की धरती ने अनेक वीर पुरुषों को जन्म दिया है।

Section B

3. **प्राकृतिक आपदाएँ**

प्राकृतिक आपदा को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि यह एक ऐसी प्राकृतिक घटना है जिससे अनेक लोग प्रभावित हों और उनका जीवन खतरे में हो। प्राकृतिक आपदा एक असामान्य प्राकृतिक घटना है, जो कुछ समय के लिए ही आती है, परंतु अपने विनाश के चिह्न लंबे समय के लिए छोड़ जाती है।
प्राकृतिक आपदाएँ अनेक तरह की होती हैं, जैसे-हरिकेन, सुनामी, सूखा, बाढ़, टायफून, बवंडर, चक्रवात आदि, मौसम से संबंधित प्राकृतिक आपदाएँ है। दूसरी ओर भूस्खलन एवं बर्फ की सरकती चट्टानें ऐसी प्राकृतिक आपदाएँ हैं, जिसमें स्थलाकृति परिवर्तित हो जाती है। भूकंप एवं ज्वालामुखी प्लेट विवर्तनिकी के कारण आने वाली प्राकृतिक आपदाएँ हैं। इन प्राकृतिक आपदाओं के पीछे उल्लेखनीय योगदान मानवीय गतिविधियों का भी होता है। मानव अपने विकास कार्यो के लिए

प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करता है। वैश्विक तापीकरण भी प्राकृतिक आपदा का ही एक रूप है। वस्तुतः जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिक क्रियाकलाप तथा प्रकृति के साथ खिलवाड़ ऐसे मुख्य कारण हैं, जिनके कारण मानव समाज को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है।

प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण उपाय यह है कि ऐसी तकनीकों को विकसित किया जाए, जिससे प्राकृतिक आपदाओं की सटीक भविष्यवाणी की जा सके, ताकि समय रहते जान-माल की सुरक्षा संभव हो सके। इसी उद्देश्य के तहत अंतरिक्ष विज्ञान से इस क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता मिली है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक आपदा की स्थिति उपस्थित होने पर किस तरह उससे निपटना चाहिए, इसके लिए आपदा प्रबन्धन सीखना अति आवश्यक है। इस उद्देश्य हेतु एक व्यवस्थित पाठ्यक्रम होना चाहिए तथा प्रत्येक नागरिक के लिए इसका प्रशिक्षण अनिवार्य होना चाहिए।

OR

परहित सरिस धर्म नहिं भाई

परोपकार से बड़ा इस संसार में कुछ नहीं होता है। इस विषय में गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है कि-

"परहित सरिस धर्म नहिं भाई।

परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।"

अर्थात् परहित (परोपकार) के समान दूसरा कोई धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा (कष्ट) देने के समान कोई अन्य नीचता या नीच कर्म नहीं है। पुराणों में भी कहा गया है, 'परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम्' अर्थात् दूसरों का उपकार करना सबसे बड़ा पुण्य तथा दूसरों को कष्ट पहुँचाना सबसे बड़ा पाप हैं।

परोपकार की भावना से शून्य मनुष्य पशु तुल्य होता है, जो केवल अपने स्वार्थों की पूर्ति तक ही स्वयं को सीमित रखता है। मनुष्य जीवन बेहतर है क्योंकि मनुष्य के पास विवेक है। उसमें दूसरों की भावनाओं एवं आवश्यकताओं को समझने तथा उसकी पूर्ति करने की समझ है और इस पर भी अगर कोई केवल अपने स्वार्थ को ही देखता हो, तो वाकई वो मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है।

इसी कारण मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। इस दुनिया में महात्मा बुद्ध, ईसा मसीह, दधीचि ऋषि, अब्राहम लिंकन, मदर टेरेसा, बाबा आम्टे जैसे अनगिनत महापुरुषों के जीवन का उद्देश्य परोपकार ही था। भारतीय संस्कृति में भी इस तथ्य को रेखांकित किया गया है कि मनुष्य को उस प्रकृति से प्रेरणा लेनी चाहिए, जिसके कण-कण में परोपकार की भावना व्याप्त है। भारतीय संस्कृति में इसी भावना के कारण पूरी पृथ्वी को एक कुटुंब माना गया है तथा विश्व को परोपकार संबंधी संदेश दिया गया है। इसमें सभी जीवों के सुख की कामना की गई है।

OR

आज की बचत कल का सुख

वर्तमान आय का वह हिस्सा, जो तत्काल व्यय (खर्च) नही किया गया और भविष्य के लिए सुरक्षित कर लिया गया 'बचत' कहलाता है। पैसा सब कुछ नहीं रहा, परंतु इसकी ज़रूरत हमेशा सबको रहती है। आज हर तरफ़ पैसों का बोलबाला है क्योंकि पैसों के बिना कुछ भी नहीं। आज ज़िंदगी और परिवार चलाने के लिए पैसे की ही अहम भूमिका होती है। आज

के समय में पैसा कमाना बहुत मुश्किल है । उससे कहीं अधिक कठिन है, पैसे को अपने भविष्य के लिए सुरक्षित बचाकर रखना, क्योंकि अनाप-शनाप खर्च और बढ़ती महँगाई के अनुपात में कमाई के स्रोतों में कमी होती जा रही है इसलिए हमारी आज की बचत ही कल हमारे भविष्य को सुखी और समृद्ध बना सकने में अहम भूमिका निभाएगी। आज के दौर में बचत नहीं करना एक मूर्खतापूर्ण निर्णय साबित होता है।

जीवन में अनेक बार ऐसे अवसर आ जाते हैं, जैसे आकस्मिक दुर्घटनाएँ हो जाती हैं, रोग या अन्य शारीरिक पीड़ाएँ घेर लेती हैं, तब हमें पैसों की बहुत आवश्यकता होती है। यदि पहले से बचत न की गई तो विपत्ति के समय हमें दूसरों के आगे हाथ फैलाने पड़ सकते हैं। कभी-कभी तो पैसों के अभाव में बहुत बड़ा अनर्थ हो जाता है और हम कुछ कर भी नहीं पाते हैं। हमारी आज की छोटी-छोटी बचत या धन निवेश ही हमें भविष्य में आने वाले तमाम खर्चे का मुफ्त समाधान कर देती है। आज की थोड़ी-सी समझदारी आने वाले भविष्य को सुखद बना सकती है। बचत करना एक अच्छी आदत है, जो हमारे वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के लिए भी लाभदायक सिद्ध होती है। किसी ज़रूरत या आकस्मिक समस्या के आ जाने पर बचाया गया पैसा ही हमारे काम आता है। संक्षेप में कह सकते हैं कि बचत करके हम अपने भविष्य को सँवार सकते हैं तथा आकस्मिक दुर्घटनाओं और भविष्य की मुसीबतों से बच सकते हैं।

4. तिलक नगर, नई दिल्ली।
17 अप्रैल , 2019
सेवा में,
मंत्री, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार,
नई दिल्ली।
विषय- टी.वी. के माध्यम से फैलाई जाने वाली भ्रांतियाँ एवं अंधविश्वास के संबंध में
महोदय,
एक सजग नागरिक होने के नाते मैं आपका ध्यान टी.वी. के माध्यम से विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों द्वारा फैलाई जाने वाली भ्रांतियों एवं अंधविश्वासों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। आजकल विविध प्रकार के ऐसे कार्यक्रम विभिन्न टी.वी. चैनलों पर प्रसारित किए जा रहे हैं, जिनसे रूढ़िवादिता एवं अंधविश्वास को बल मिलता है। इन कार्यकर्मों का युवा पीढ़ी पर बुरा प्रभाव पड़ता है, इससे युवा पीढ़ी गलत दिशा में जा रही है।
इस तरह के कार्यक्रमों का केवल एक ही उद्देश्य होता है व्यावसायिक दृष्टि से चीज़ों को अधिक सनसनीखेज़ बनाकर प्रस्तुत करना, ताकि अधिक-से-अधिक दर्शकों को आकर्षित किया जा सके। विभिन्न प्रकार के पारिवारिक कार्यक्रमों में भी अंधविश्वास को घुसा दिया जाता है, ताकि उस सीरियल को अधिक लंबा खींचा जा सके। टी.वी. के विभिन्न चैनलों के प्रबंधकों एवं संचालकों को इस बात की थोड़ी भी चिंता नहीं रहती कि इस तरह के कार्यक्रमों का समाज की नई पीढ़ी पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
नई पीढ़ी के अतिरिक्त वर्तमान पीढ़ी के विचार भी इससे दुष्प्रभावित होते हैं और समाज में अवैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा मिलता है। अवैज्ञानिक एवं अतार्किक दृष्टिकोण कभी भी विकास एवं प्रगति के मार्ग पर नहीं ले जा सकता। इस तरह पूरा समाज रूढ़िवादिता एवं अवैज्ञानिकता का शिकार हो रहा है।
मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि आप इस तरह के अंधविश्वासों एवं भ्रांतियों को फैलाने वाले कार्यक्रमों को रोकने के लिए

अविलंब उचित निर्देश जारी करें, ताकि समय रहते समाज को गलत दिशा में जाने से रोका जा सके।

धन्यवाद।

भवदीय

महेश प्रकाश

OR

सेवा में,

प्रबंधक महोदय,

स्पार्क हेवन होटल,

नैनीताल, उत्तराखंड।

17 अप्रैल, 2019

विषय -होटल में कमरे आरक्षित करवाने हेतु।

महोदय,

मैं जय प्रकाश, दिल्ली का निवासी हूँ। मैंने आपके होटल की आवभगत के विषय में बहुत प्रशंसा सुनी है। मैं और मेरा परिवार दिनांक 25 अप्रैल, 2019 से 27 अप्रैल, 2019 तक नैनीताल में पर्यटन के उद्देश्य से आ रहे हैं इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप अप्रैल 20, 2019 से 27 अप्रैल 27 , 2019 तक की दिनांक के लिए मेरे नाम से दो कमरे आरक्षित कर दीजिए।

धन्यवाद

भवदीय

जय प्रकाश

दिल्ली

5. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिये:

    a. पेज थ्री पत्रकारिता को 'पीत-पत्रकारिता' भी कहा जाता है। इसके तहत सनसनी, चकाचौंध या ग्लैमर फैलाने वाली पत्रकारिता को महत्त्व दिया जाता है। यह पत्रकारिता अमीर और रईस आदमियों पर आधारित होती है ।

    b. पत्रकारिता में संवाददाताओं के बीच उनकी योग्यता एवं रुचि के अनुसार कार्य का विभाजन बीट कहलाता है।

    c. कोई भी समाचार-पत्र जिस अवधि के बाद छपता है, वह अवधि ही किसी समाचार के लिए डेड लाइन होती हैं। प्रायः समाचार-पत्र 24 घंटे बाद छपते हैं। अतः पिछले 24 घंटो की खबरें ही छपने योग्य होती हैं। उससे पूर्व की सूचनाएँ बेकार हो जाती है। अतः समाचार-पत्रों के लिए 24 घंटे की अवधि डेड लाइन होती है।

    d. पत्रकारिता की भाषा में आमुख को 'मुखड़ा', 'इंट्रो' (Intro) या 'लीड' (Lead) भी कहा जाता है। यह समाचार का पहला अनुच्छेद होता है। आमुख में समाचार के विषय में तीन प्रश्न 'क्या, कहाँ एवं कब' का परिचय दिया जाता है।

    e. समाचार माध्यमों के लिए पत्रकारों द्वारा किया गया लेखन पत्रकारीय लेखन कहलाता है।

6. **बढ़ते अपराध**

वर्तमान दौर में अपराध की दिनोंदिन बढ़ोतरी हो रही है। खासकर आजकल दिल्ली विविध प्रकार के अपराधों का केंद्र बनती जा रही है। दिल्ली में आजकल गुंडागर्दी, बलात्कार, हत्याएँ, लूटपाट, अपहरण जैसी आपराधिक घटनाएँ लगातार बढ़ रही हैं। देश की राजधानी में ये सब घटनाएँ आम हो चुकी हैं। दिल्ली शिक्षा एवं जीविका की सुविधाओं का केंद्र है। सभी छोटे-बड़े शहरों से लड़कियाँ इस केंद्र (दिल्ली) की ओर अपना जीवन सँवारने के उद्देश्य से आती रहती हैं। अब लड़कियाँ यहाँ पर अपने को सुरक्षित महसूस नहीं कर पा रही हैं, न तो उनके माता-पिता ही आश्वस्त हो पाते हैं। दिनों-दिन जिस तरह से यहाँ अपराधों की संख्या बढ़ती जा रही है, छेड़खानी की घटनाएँ तो आम बात हो गई है। देश की राजधानी दिल्ली 'अमन चैन की राजधानी' न रहकर असामाजिक तत्वों व अपराधियों द्वारा 'भय व आतंक के वातावरण की राजधानी' बनकर रह गई है। दिन-दहाड़े दुकानदारों से लूट, घरों में चोरी, छोटे बच्चों का अपहरण, लड़कियों से छेड़छाड़ व बलात्कार तो जैसे आम बात हो गई है।

सुबह-सुबह समाचार-पत्र देखने पर ऐसा लगता है जैसे दिल्ली में पुलिस का नहीं, बल्कि अपराधियों का बोलबाला है। सड़क पर दुर्घटना होती है, पर लोग आँख बंद करके निकल जाते हैं। कोई किसी की मदद करता भी है, तो पुलिस और राजनीति के चक्र में ऐसा फँसता है कि आगे से मदद करने लायक ही नहीं बचता।

इन बढ़ते अपराधों से दिल्ली की छवि विश्व के मानचित्र पर धूमिल हो रही है और विदेशी सैलानी आने से कतराने लगे हैं। अगर जल्द ही इन सब पर अंकुश नहीं लगाया गया, तो भविष्य और भी भयावह बनता जाएगा।।

OR

सांप्रदायिकता का ज़हर

अपने धर्म अथवा सम्प्रदाय के अतिरिक्त किसी और धर्म अथवा सम्प्रदाय के प्रति बिना किसी उचित कारण के घृणा और नफ़रत के भाव का होना,सम्प्रदायिकता कहलाता है। वर्तमान समय में देश में सांप्रदायिक सद्भावना की अत्यंत आवश्यकता है। देश में स्वतंत्रता से पूर्व ही सांप्रदायिक दंगों ने भयावह रूप धारण कर लिया था। उस समय अनेक हिंदुओं एवं मुसलमानों को मौत के घाट उतार दिया गया था। देश आज़ाद तो हुआ, परंतु दो टुकड़ों में बँट गया। हमारे शासकों ने भारत को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र की संज्ञा दी और पाकिस्तान बनने के बावजूद करोड़ो बार सांप्रदायिक दंगे हुए। इन दंगों में लाखों निरीह लोगों को जान से हाथ धोना पड़ा।

वर्ष 2002 में गुजरात के गोधरा में ट्रेन के दरवाज़े बंद कर पेट्रोल से आग लगाकर लगभग 250 लोगों को जिंदा जला दिया गया। इसके पश्चात् गुजरात में सांप्रदायिक दंगों की आग फैल गई और हज़ारों लोगों को जान से हाथ धोना पड़ा। सितंबर, 2012 में सांप्रदायिक दंगा करने वाले कुछ लोगों को आजीवन कारावास की सजा दी गई।

वास्तव में, सरकार किसी भी मूल्य पर अपना शासन बनाए रखना चाहती है। अतः वह अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा के नाम पर कभी मुसलमानों के लिए आरक्षण की बात करती है और कभी ईसाई अल्पसंख्यकों को संतुष्ट करती है।

यदि सरकार सत्ता की लिप्सा में अंधी न हो, तो देश में तत्काल सांप्रदायिक सद्भावना स्थापित हो सकती है।

सांप्रदायिकता का संबंध जितना धर्म से जुड़ता है, उससे अधिक राजनीति से जुड़ता है।सही मायने में सम्प्रदायिकता का विष राजनीति द्वारा ही फैलाया जाता रहा है, लेकिन इसे धर्म पर थोप दिया जाता आ रहा है।

स्वार्थी राजनीतिक तत्त्वों द्वारा अपने हितों की पूर्ति के लिए जनसामान्य के बीच धार्मिक उन्माद पैदा किया जाता है और फिर भड़की सांप्रदायिकता की आग पर वे अपनी रोटियाँ सेंकते हैं। जब तक राजनीति की इच्छाशक्ति सुदृढ़ नहीं होगी, तब तक सांप्रदायिकता का दानव हर समाज को लीलता रहेगा।

OR

समाचार-पत्रों में विविध प्रकार की खबरें प्रकाशित होती हैं। सामान्यत: दुर्घटना, अपराध, आदि से सम्बन्धित खबरें, रोजमर्रा के घटनाक्रम, दुर्घटनाओं और अपराध से सम्बन्धित खबरें हार्ड न्यूज कहलाती हैं तथा मानवीय रुचि व मानवीय संवेदनाओं से जुड़ी खबरें सॉफ्ट न्यूज कहलाती हैं।

Section C

7. i. 'निज उर के उद्‌गार' से कवि का तात्पर्य अपने हृदय की वाणी की अभिव्यक्ति से है। कवि कहना चाहता है कि वह अपने हृदय में उमडते-घुमड़ते मनोभावों को स्नेहयुक्त वाणी से अभिव्यक्त करना चाहता है।
   ii. मनुष्य अपनी असीम इच्छाओं एवं आकांक्षाओं के कारण इस भौतिक संसार में इतना उलझा हुआ है कि उनके मध्य प्रेमभाव निरंतर समाप्त होता जा रहा है। इस प्रेम भावना से शून्य होने के कारण ही यह संसार कवि को अपूर्ण एव अप्रिय लगता है।
   iii. संसार की विषमताओं के बीच भी कवि सुख दुःख में मग्न रहते हुये प्रेम भाव से इस विपत्ति रूपी संसार के सागर को पार कर लेता है और मस्त भाव से रहता है।

OR

   i. इस काव्यांश में राम का साधारण मनुष्य जैसा रूप दिखाई देता है। वे लक्ष्मण के प्रति स्नेह व प्रेमभाव को व्यक्त करते हैं तथा संसार के हर सुख से ज्यादा सगे भाई को महत्त्व देते हैं।
   ii. राम ने भ्रातृ-प्रेम की तुलना में पुत्र, धन, स्त्री, घर और परिवार सबको हीन माना है। उनके अनुसार, ये सभी चीजें आती-जाती रहती हैं, परंतु सगा भाई बार-बार नहीं मिलता।
   iii. इस कथन से श्रीराम का कर्तव्यबोध झलकता है। वे अपनी जिम्मेदारी पर लक्ष्मण को अपने साथ लाए थे, परंतु वे अपना कर्तव्य पूरा न कर सके। अतः वे अयोध्या में अपनी जवाबदेही से डरे हुए थे।

8. i. प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने घर की छत पर पतंग के पीछे दौड़ते हुये बच्चे उसके किनारों से गिरने से बच जाते हैं तो वे और भी अधिक निडर होकर सुनहले सूरज के सम्मुख आने का उल्लेख किया है, उनके पैरों के बेचैन होने तथा पृथ्वी के तेजी से घूमते हुए बच्चो के पैरों के पास आने की चर्चा की है। ये सभी भाव बच्चों में नवीन ऊर्जा, उत्साह और आत्मविश्वास आ जाने के सूचक है कि वे लक्ष्य प्राप्ति के लिए कुछ भी कर सकते हैं।
   ii. काव्यांश की भाषा साहित्यिक खड़ी बोली तथा शैली नवीनता से युक्त है। कवि ने भावाभिव्यक्ति के लिए सर्वथा नवीन उपमानो का चयन किया है। भाषा में तत्सम-तद्भव शब्दो के साथ उर्दू शब्दो का सुंदर मेल हुआ है। लाक्षणिक एव बिंब प्रधान होते हुए भी भाषा का सहज एवं गतिशील होना कवि की अपनी खास भाषिक विशेषता है। पृथ्वी के मानवीकरण का सुंदर प्रयोग है।

OR

i. प्रस्तुत काव्यांश में खेती के कार्यों के रूपकों के जरिए कवि ने अपने रचना-कर्म को व्याख्यायित किया है। जिस प्रकार खेत में बीज बोया जाता है, वैसे ही कवि मनोभावों और विचारों के बीज बोता है। इस बीजारोपण से शब्द रूपी अंकुर फूटते हैं और साहित्यिक कृति रूपी फसल विकसित होती है। इसके माध्यम से कवि ने साहित्य की जीवंतता और अनंतकाल तक उसके अस्तित्व में बने रहने की बात कही है।

ii. मनोभावों की तुलना 'अंधड़' से की गई है क्योंकि भावना एवं विचार आँधी की तरह मन में आते हैं तभी तीव्र मनोभावों की उत्पत्ति द्वारा काव्य-सृजन होता है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 60-70 शब्दों में दीजिये:

a. कवि कहता है कि जब अपनी बात को सहज रूप से न कहकर तोड़-मरोड़ कर या घुमा-फिराकर कहने का प्रयास किया जाता है तो बात उलझती चली जाती है। ऐसी बातों के अर्थ श्रोता या पाठक समझ नही पाता। वह मनोरंजन तो पा सकती है परंतु कवि के भावों को समझने में असमर्थ होता है। कभी-कभी तो बात उलझ जाती है और यदि मजे के लिए लोग उसे समर्थन देने लगते हैं तो उसे स्पष्ट करने के चक्कर में बात पेचीदा हो जाती है।

b. प्रातः कालीन सूर्य उदित हो रहा है 'जो ऐसा लगता है' मानो वह अपने सुनहरे वस्त्रों की रोशनी से आकाश और धरती दोनों को भर देता है। सभी अपने दिन की शुरुआत उस सुनहरी आभा से करते है। धीरे-धीरे दिन आगे बढ़ता है सूर्यास्त के समय जैसे हम अपनी पोशाक बदल कर सोने जाते है वैसे ही सूर्य हल्की लाल पोशाक पहनकर सोने के लिए तैयार हो जाता है। उसे देखकर सभी अपने दैनिक कार्य समाप्त कर सोने की तैयारी करने लगते है।

c. गोरखपुरी की रूबाइयाँ कलापक्ष की दृष्टि से बेहतरीन बन पड़ी हैं। भाषा सहज, सरल और प्रभावी हैं। भावानुकूल शैली का प्रयोग हुआ है। उर्दू शब्दावली के साथ-साथ शायर ने देशज संस्कृत के शब्दों का प्रयोग भी स्वाभाविक ढंग से किया है। लोका, पिन्हाती, पुते, लावे आदि शब्दों के प्रयोग से उनकी रुबाइयाँ अधिक प्रभावी बन पड़ी हैं।

10. i. लेखक को ऐसा इसलिए कहता है क्योंकि आज हम बस बातें ही करते रहते है कि देश में भ्रष्टाचार बढ़ता ही जा रहा है। हमारी माँगे तो बड़ी-बड़ी है, किंतु व्यक्तिगत रूप से हम देश के लिए कुछ भी नही करते है।

ii. हम दूसरों से दूसरों के भ्रष्टाचार की बातें तो करते है, पर स्वयं को नही देखते। जबकि अपने दायरे मे हम भी उसी भ्रष्टाचार के अंग बन गए होते है परंतु अपने में हम कभी भी दोष नही निकालते, जबकि दूसरों की आलोचना करना हमें आसान लगता है। हमे ऐसी आलोचना नहीं करनी चाहिए।

iii. लेखक ने सरकार पर व्यंग्य करते हुए कहा है कि आज हमारे अधिकांश सरकारी अधिकारी अपने निजी सुखों के लिए देश की सुरक्षा या अन्य हितों को भी पीछे छोड़ देते हैं। सरकार द्वारा गरीबों के विकास के लिए अनेक योजनाएँ बनाई जाती है, परंतु उसका लाभ गरीबों तक न पहुँच कर भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाता है।

OR

i. सांसारिक बंधनों एवं विषय-वासनाओं से ऊपर उठे हुए संन्यासी को अवधूत कहते हैं जिस पर वाह्य एवं सांसारिक

परिस्थितियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। लेखक शिरीष को अवधूत मानता है क्योंकि शिरीष भी अवधूत की भाँति सुख हो या दुःख, हार नहीं मानता। जिस प्रकार एक अवधूत जीवन की कठिन परिस्थितियों का मुस्कुराते हुए सामना करता है, उसी प्रकार शिरीष भी आँधी-तूफ़ान का सहर्ष सामना करके अडिग खड़ा रहता है।

ii. 'यह हज़रत' शिरीष है। यहाँ शिरीष के वृक्ष की उस विशेषता का उल्लेख किया गया है, जिसके तहत वह वायुमंडल से रस खींच लेने की विशेषता के कारण तपती लू एवं जलते आसमान के समय भी अपने कोमल तंतुजाल एवं सुकुमार केसर को उगा लेता है।

iii. भयंकर लू के समय भी अपने कोमल तंतुजाल एवं सुकुमार केसर को उगा सकने की शिरीष की क्षमता के कारण ही लेखक वनस्पतिशास्त्री के इस कथन को सच मानता है कि शिरीष उस श्रेणी का पेड़ है, जो वायुमंडल से अपना रस खींचता है।

11. निम्नलिखित A, B, C प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिये, प्रश्न D अनिवार्य है : (4+4+2)

a. बाजारुपन से तात्पर्य ऊपरी चमक-दमक से है। जब सामान बेचने वाले बेकार की चीजों को आकर्षक बनाकर मनचाहे दामों में बेचने लगते हैं, तब बाज़ार में बाजारुपन आ जाता है,इसके अलावा धन को दिखावे की वस्तु मान कर व्यर्थ में उसका दिखावा करने वाले ग्राहक भी बाजार में बाजारूपन लाने में सहायक होते हैं।
जो विक्रेता, ग्राहकों का शोषण नहीं करते और छल-कपट से ग्राहकों को लुभाने का प्रयास नहीं करते साथ ही जो ग्राहक अपनी आवश्यकताओं की चीजें खरीदते हैं वे बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं। इस प्रकार विक्रेता और ग्राहक दोनों ही बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं।
मनुष्य की आवश्यकताओं की ज्यादा से ज्यादा पूर्ति करने में ही बाजार की सार्थकता है।

b. **भारत-पाकिस्तान के आपसी संबंधों को सुधारने के लिए सरकारें व्यापक स्तर पर प्रयास करती हैं लेकिन व्यक्तिगत तौर पर हमें भी छोटे-छोटे प्रयास करने चाहिए जैसे:-**

i. पिछली सभी कड़वी बातों को भुलाने का प्रयास करूँगा।
ii. जहाँ तक हो सके मैं पाकिस्तान देश की आलोचना नहीं करूँगा ।
iii. देश में आए पाकिस्तानी नागरिक को इतना मान-सम्मान दूँगा कि वह भारत देश की मीठी यादें लेकर अपने देश जाए।
iv. सांस्कृतिक और खेल कूद के स्तर पर आई वहाँ की टीमों का तहे दिल से स्वागत करूँगा।
v. सूचना क्रांति के इस युग में इंटरनेट का प्रयोग कर पाकिस्तान में अपने दोस्तों का दायरा बढ़ाने का प्रयास करूँगा।

c. हाँ, हम इस बात से पूरी तरह सहमत हैं क्योंकि भक्तिन के पुत्र न होने पर उसे उपेक्षा अपने ही घर की स्त्रियों अर्थात सास और जिठानियों से मिली। सास और जिठानियाँ चौकी पर बैठ कर आराम फरमाती थी क्योंकि उन्होंने लड़कों को जन्म दिया था भले ही वे किसी लायक नहीं थे और भक्तिन तथा उसकी नन्हीं बेटियों को घर और खेतों का सारा काम करना पड़ता था। यहाँ तक कि उनके खाने पीने में भी अन्तर था जेठानियों के लड़के दूध-मलाई खाते और

लड़कियाँ मोटा अनाज।लड़कियाँ होने के बावजूद उसके पति का भक्तिन के प्रति स्नेह कभी भी कम नहीं हुआ।
मेरे हिसाब से किसी भी घर में बिना स्त्री की सहमति के भ्रूणहत्या, दहेज़ की माँग, परिवार में बेटा-बेटी में अंतर, बेटी-बहुओं पर अत्याचार आदि नहीं किया जा सकता।

d. **मेकिंग ए लिविंग** की सबसे बड़ी विशेषता तो यही है कि इसने अभी 75 वर्ष पूरे किए हैं। पौन शताब्दी से उनकी फ़िल्म दुनिया के सामने है। यह फ़िल्म पाँच पीढ़ियों को मुग्ध कर चुकी है। इसकी लोकप्रियता आज भी ज्यों की त्यों बनी हुई है। यह फ़िल्म न केवल फ़िल्म जगत की बल्कि चार्ली चैप्लिन के जीवन में भी मील का पत्थर साबित हुई।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 80-100 शब्दों में दीजिये:

a. इस पार्टी में यशोधर बाबू का व्यवहार बड़ा अजीब लगा। उन्हें पार्टी इंप्रापर लगी क्योंकि उनके अनुसार ये सब अंग्रेजों के चोचले थे। अपनी पत्नी और पुत्री की ड्रेस इंप्रापर लगी, विहस्की इंप्रापर लगी, केक भी नहीं खाया क्योंकि उसमें अंडा होता है। लड्डू भी नहीं खाया क्योंकि शाम की पूजा नहीं की थी। पूजा में जाकर बैठ गए ताकि मेहमान चले जाएँ। उनका ऐसा व्यवहार वास्तव में उनकी स्मृति में बसा हुआ उनका अतीत एवं किशनदा की प्रेरणा के कारण था। यदि वे इस स्थिति से थोड़ा सामंजस्य बिठा पाते तो इतनी समस्या नहीं होती। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि एक पिता एवं यशोधर जैसे अतीत वाले व्यक्ति की दृष्टिकोण से उनका व्यवहार अनुचित नहीं था लेकिन आधुनिकता के साथ सामंजस्य न कर पाना यशोधर के व्यक्तित्व की कमी थी।

b. **सिल्वर वैडिंग** कहानी वर्तमान युग में बदलते जीवन-मूल्यों की कहानी है। इस कहानी में यशोधर पंत प्राचीन मूल्यों के प्रतीक हैं। इसके विपरीत उनकी संतान नए युग का प्रतिनिधित्व करती है। दोनों पीढ़ियों के अपने-अपने जीवन मूल्य हैं। यशोधर के बच्चे वर्तमान समय के बदलते जीवन-मूल्यों की झलक दिखलाते हैं। नई पीढ़ी जन्म-दिन, सालगीरह आदि पर केक काटने में विश्वास रखती है। नई पीढ़ी तेज़ी से आगे बढ़ना चाहती है। इसके लिए वे परंपरागत व्यवस्था को छोड़ने में संकोच नहीं करते।
यशोधर बाबू परंपरा से जुड़े हुए हैं। वे सादगी का जीवन जीना चाहते हैं। संग्रह वृत्ति, भौतिक चकाचौंध से दूर, वे आत्मीयता, सामूहिकता के बोध से युक्त हैं। इन सबके कारण वे भौतिक संसाधन नहीं एकत्र कर पाते। फलतः वे घर में ही अप्रासांगिक हो जाते हैं। उनकी पत्नी बाहरी आवरण को बदल पाती है, परंतु मूल संस्कारों को नहीं छोड़ पाती। बच्चों की हठ के सम्मुख वह मॉडर्न बन जाती है। समय के साथ-साथ मूल्य भी बदलते जा रहे हैं।

c. जूझ के कथानायक का मन पाठशाला जाने के लिए इसलिए तड़पता था क्योंकि उसे शिक्षा से अत्यंत गहरा लगाव था। शिक्षा से ही व्यक्ति अपनी उन्नति के बारे में सोच सकता है तथा वह समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर सकता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि शिक्षा व्यक्ति की उन्नति का द्वार खोलती है।
उसे खेती का काम इसलिए अच्छा नहीं लगता था क्योंकि उसे यह विश्वास था कि जन्म भर खेत में काम करते रहने पर भी हाथ कुछ नहीं लगेगा। वह सोचता था कि "जो बाबा के समय था, वह दादा के समय नहीं रहा। यह खेती हमें गड्ढे में धकेल रही है। पढ़ जाऊँगा तो नौकरी लग जाएगी, चार पैसे हाथ में रहेंगे, विठोबा आण्णा की तरह कुछ धंधा कारोबार किया जा सकेगा।"

उपर्युक्त बातों के कारण लेखक को खेती का काम अच्छा नहीं लगता था और उसका मन पाठशाला जाने के लिए तड़पता था।

d. सिन्धु सभ्यता, एक साधन-सम्पन्न नगरीय सभ्यता थी परन्तु उसमें राजसत्ता या धर्मसत्ता के चिह्न नहीं मिलते। वहाँ की नगर योजना में वास्तुकला, मुहरों, ठप्पों, जल-व्यवस्था, साफ-सफाई और सामाजिक व्यवस्था आदि की एकरूपता द्वारा उनमें अनुशासन देखा जा सकता है, आडंबर नहीं। यहाँ पर सब कुछ आवश्यकताओं से ही जुड़ा हुआ है, वहाँ यातायात के साधन के रूप में बैलगाड़ी की व्यवस्था थी, अनाज भंडार भरे थे। नागरिक सुविधासंपन्न थे किन्तु भव्यता का प्रदर्शन कहीं नहीं मिलता। अन्य सभ्यताओं में राजतंत्र और धर्मतंत्र की ताकत को दिखाते हुए भव्य महल, मंदिर ओर मूर्तियाँ बनाई गईं किंतु सिन्धु घाटी सभ्यता की खुदाई में छोटी-छोटी मूर्तियाँ, खिलौने, मृद-भांड, नावें मिली हैं। 'नरेश' की मूर्ति के सिर पर जो 'मुकुट' है शायद उससे छोटे 'सिरपेंच' की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसमें प्रभुत्व या दिखावे के तेवर कहीं दिखाई नहीं देते। इस प्रकार सिंधु सभ्यता विकसित साधन सम्पन्न सभ्यता थी लेकिन भव्यता का दिखावा कहीं नहीं था।

e. सिंधु घाटी सभ्यता मे अनेक प्रकार की कृषि उपजों के उत्पादन के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। मुख्यतः यहाँ रबी की फसल उगाई जाती थी। कपास, गेहूँ, जौ, सरसों और चने की उपज के पुख्ता प्रमाण खुदाई में मिले हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ ज्वार, बाजरे और रागी की खेती होती थी। यहाँ के लोग खरबूज़े, खजूर और अंगूर भी उगाते थे, झाड़ियों से बेर जमा करते थे तथा कपास की खेती भी होती थी।